بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स॰] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 04

राह-ए-ईमान

अप्रैल
2022 ई॰

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.......... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.......... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें)..........4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 11-03-2022)..........8
7. कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर..........12
8. विश्व शान्ति के लिए जमाअत अहमदिया प्रमुख के विश्वव्यापी प्रयास..........17
9. सामान्य ज्ञान..........28
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें..........32
11. जलसा सालाना क़ादियान 2022 की तिथियों का ऐलान..........32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

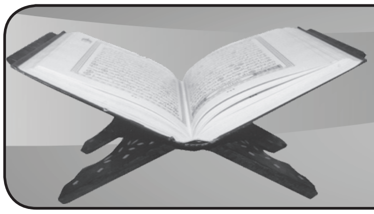

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُلۡهِكُمۡ اَمۡوَالُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ.....وَلَنۡ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفۡسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ۔

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो तुम्हें तुम्हारे मालो दौलत और तुम्हारी औलाद अल्लाह के ज़िक्र (गुणगान) से ग़ाफ़िल न कर दें। और जो ऐसा करें तो यही वे लोग हैं जो घाटा खाने वाले हैं। और ख़र्च करो उस में से जो हमने तुम्हें दिया है पूर्व इसके कि तुम में से किसी को मौत आ जाये तो वह कहे- हे मेरे रब! काश तू ने मुझे थोड़े समय तक मोहलत दी होती तो मैं ज़रूर दान-दक्षिणा करता और सदाचारियों में से हो जाता। लेकिन जब किसी की निर्धारित समय सीमा आ पहुंची हो तो अल्लाह उसको हरगिज़ मोहलत नहीं देगा। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो हमेशा अवगत रहता है। (सूरः अल-मुनाफ़िक़ून 10-12)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद- हज़रत अबू मूसा अ'शअरी रज़ि वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (ख़ुदा का) ज़िक्र करने वाले और ज़िक्र न करने वालों का उदाहरण जीवित और मृत की तरह है अर्थात् जो ज़िक्र करता है वह जीवित है और जो नहीं करता वह मृत है। मुस्लिम की रिवायत है कि आं हज़रत सल्ल ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। वह घर जिस में ख़ुदा तआला का ज़िक्र होता है और वह घर जिस में ख़ुदा तआला का ज़िक्र नहीं होता, उनके उदाहरण जीवित और मृत की तरह हैं।

(बुख़ारी किताबुल दावात)

अनुवाद- हज़रत अबूहुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया "अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते इस लोक में घूमते रहते हैं तथा ऐसी बैठकों की खोज में रहते हैं कि जिन में अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाता है अर्थात् अल्लाह तआला की भक्ति करते हुए उसका गुणगान किया जाता है तथा जब उन्हें कोई ऐसी मज्लिस मिल जाती है जिस में अल्लाह तआला का ज़िक्र होता है तो वे वहां बैठ जाते हैं और अपने परों से उस मज्लिस को ढांप लेते हैं और सारा वातावरण उनकी शुभ छाया से भर जाता है। जब लोग इस मज्लिस से उठ जाते हैं तो फ़रिश्ते भी आकाश की ओर चढ़ जाते हैं। (मुस्लिम किताबुल ज़िक्र, बाब फज़लुल मजालिस अल्ज़िक्र पृष्ठ 228)

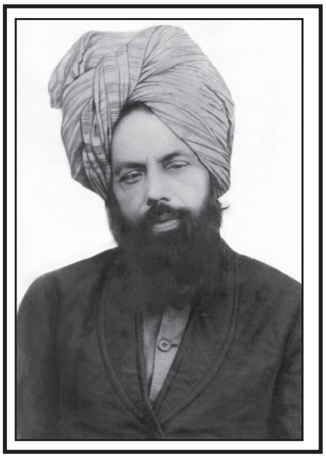

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

क़ुरआन के साथ सुधारक की ज़रूरत

फिर उसी युवक ने कहा कि उन्होंने मुझसे यह प्रश्न भी किया है कि अगर क़ुरआन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो किसी के आने की क्या ज़रूरत है? उसने कहा: क्या ख़ुदा की ओर से किसी के आने का एकमात्र कारण है यही है कि क़ुरआन में परिवर्तन हो ? इसके अलावा, क़ुरआन में अर्थों का जो परिवर्तन किया गया है, जबकि उसमें लिखा है कि मसीह की मृत्यु हो गई और ये लोग कहते हैं कि वह जीवित आसमान पर चढ़ गया और परिवर्तन (विकृति) क्या है? ये लोग परिवर्तन कर रहे हैं और फिर मुसलमानों की व्यावहारिक स्थिति बहुत खराब होती जा रही है प्रकृति वादियों को देखो, उन्होंने क्या छोड़ा है, उन्हें स्वर्ग और नर्क का विश्वास नहीं है। वे फरिश्तों में विश्वास नहीं करते हैं, वे इल्हाम और दुआ और चमत्कारों से इनकार करते हैं। उन्होंने यहूदियों के कान काट दिए और यहां तक कि तसलीस को मानने में मुक्ति को स्वीकार कर लिया। यह स्थिति हो चुकी है और फिर वे कहते हैं कि किसी के आने की जरूरत नहीं है। हैरानी की बात है कि दुनिया पाप से भरी हुई है, लेकिन उनकी स्थिति इतनी विकृत है कि उन्हें पता भी नहीं है कि एक सुधारक की आवश्यकता है, लेकिन समय आ रहा है जब ख़ुदा उन्हें जागरूक करेगा।

समय तो ऐसा था कि वे रोते-बिलखते रात गुजारते, लेकिन उनकी इस शोखी से पता चलता है कि वे बहुत ही अभागे हैं।

पाप से बचने के माध्यम :

पाप से बचने के लिए हृदय में ईश्वर का भय होना आवश्यक है और जब ईश्वर चाहता है अपना भय हृदय में डालदेता है। प्रेम भी एक साधन है पाप से बचने के लिए, लेकिन यह एक बहुत ही उच्च पद है, लेकिन डर एक सामान्य स्रोत है जिससे युवा भी डरते हैं,

विशेषकर इन दिनों, बल्कि कुछ डॉक्टरों का कहना है कि रक्त में उबाल होने के कारण बूढ़ों की तुलना में युवाओं को प्लेग का खतरा अधिक होता है। तो इन दिनों, जो भगवान के क्रोध के दिन कहलाते हैं, वास्तव में भगवान की दया के दिन हैं, क्योंकि वही हैं जो मनुष्य को जगाते हैं और उसे लापरवाही के जीवन से बाहर निकालते हैं।....और एक यह भी इलाज है पापों से बचने का कि "कश्ती नूह" में जो उपदेश लिखे हैं उनको प्रतिदिन एक बार पढ़ लिया करो। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 253-254)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन
तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)
(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

ये हैं हमारे विरोधी मौलवियों के ऐतराज़ जिन्होंने क़ुर्आन और हदीस का ज्ञान पढ़ कर डुबो दिया अब तक उन्हें मालूम नहीं कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी और वादे की भविष्यवाणी में अन्तर क्या है? और अब तक यूनुस नबी के किस्से से भी अपरिचित हैं जो दुर्रेमन्सूर में भी विस्तारपूर्वक दर्ज है। चूंकि इनकी नीयतें ठीक नहीं इसलिए ऐतराज़ के समय उनको वे भविष्यवाणियां याद नहीं रहतीं जो दस हज़ार से भी अधिक मुझ से घटित हो चुकीं हैं और जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया था वैसा ही प्रकट हुआ और यदि कोई अज़ाब पर आधारित थी अपने समय से टल गयी हो तो उस पर शोर मचाते हैं, जिससे मालूम होता है कि इन लोगों का ख़ुदा तआला की किताबों पर ईमान ही नहीं और मुझ पर आक्रमण करने के जोश से समस्त नबियों पर आक्रमण करते हैं। ये मूर्ख नहीं जानते कि यदि डिप्टी आथम पन्द्रह महीने में नहीं मरा तो अन्ततः कुछ माह बाद मेरे जीवन में ही मर गया और भविष्यवाणी में स्पष्ट तौर पर ये शब्द थे कि झूठा सच्चे की ज़िन्दगी में मर जाएगा उसका दावा था कि ईसाई धर्म सच्चा है और मेरा दावा था कि इस्लाम सच्चा है। तो ख़ुदा ने मेरे जीवन में उसे मार दिया और मुझे सच्चा किया। पन्द्रह महीने को बार-बार वर्णन करना तथा उन बातों की चर्चा न करना क्या यही इन मौलवियों की ईमानदारी है? नहीं सोचते कि यूनुस नबी की तो अज़ाब की अटल भविष्यवाणी थी जिस के बारे में खबर दी गई थी कि चालीस दिन तक इस क़ौम पर अज़ाब आ जाएगा, परन्तु वह अज़ाब उन पर न आया यहां तक कि यूनुस उन में से बहुत से लोगों के जीवन में ही मृत्यु पा गया। हाय अफ़सोस! यदि इन लोगों की नीयत ठीक होती तो आथम की घटना के बाद जो लेखराम के बारे में भविष्यवाणी की गई थी जिसके साथ कोई भी शर्त न थी और जिसमें स्पष्ट तौर पर समय और मौत का प्रकार बताया गया था उसी पर विचार करते कि कैसी सफाई से वह पूरी हुई परन्तु कौन विचार करे जब पक्षपात से दिल अंधे हो गए और दिलों में एक कण इन्साफ़ होता तो एक अत्यन्त सरल तरीक़ा उन कि लिए उपलब्ध था कि जिन भविष्यवाणियों के पूरा न होने पर उनको ऐतराज़ है वह लिखकर मेरे सामने प्रस्तुत करते कि वे कितनी हैं और फिर मुझ से इस बात का सबूत लेते कि वे भविष्यवाणियां जो पूरी हो गईं वे कितनी हैं तो इस परीक्षा से उनके समस्त पर्दे खुल जाते और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि ऐतराज़ का स्थान उनके पास केवल एक दो अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियां हैं जिन के साथ शर्त भी थी, जिन में भय और डरने के कारण विलम्ब हो गया और जिन के बारे में ख़ुदा तआला का अनादि कानून है कि वे क्षमा-याचना, दान और दुआ से टल सकती हैं। परन्तु उन के मुकाबले पर वे भविष्यवाणियां पूरी हुईं जो दस हज़ार से भी अधिक हैं जिनकी सच्चाई के लिए कई लाख लोग गवाह हैं और केवल एक फ़िर्क़ा

नहीं अपितु समस्त फ़िर्क़े। क्या मुसलमान और क्या हिन्दू और क्या ईसाई उनकी सच्चाई की गवाही देने के लिए विवश हैं। तो क्या यह ईमानदारी थी कि भविष्यवाणी की एक बड़ी फौज को जिन की सच्चाई पर लाखों लोग गवाह हैं न होने जैसा समझ कर उन से कुछ लाभ न उठाना और अज़ाब के वादे की एक दो भविष्यवाणियों को जो ख़ुदा के अनादि कानून के अनुसार विलम्ब में पड़ गईं बार-बार प्रस्तुत करना यदि यही हाल है तो किसी नबी की नुबुव्वत क़ायम नहीं रह सकती, क्योंकि इन घटनाओं का प्रत्येक नुबुव्वत में नमूना मौजूद है। इसलिए मैं कहता हूं कि ये लोग धर्म और सच्चाई के दुश्मन हैं। और यदि अब भी इन लोगों की कोई जमाअत दिल को ठीक करके मेरे पास आए तो मैं अब भी इस बात के लिए उपस्थित हूं कि उनके निरर्थक और व्यर्थ सन्देहों का उत्तर दूं और उन्हें दिखाऊं कि ख़ुदा ने एक भारी फ़ौज की तरह मेरी गवाही में कितनी भविष्यवाणियां उपलब्ध कर रखी हैं कि इस प्रकार से उनकी सच्चाई प्रकट हुई है जैसा कि दिन चढ़ जाता था। ये मूर्ख मौलवी अपनी आंखें जान बूझ कर बन्द करते हैं तो करें।

सच्चाई को इन से क्या हानि? परन्तु वह समय आता है अपितु करीब है कि बहुत से फ़िरऔनी प्रकृति के लोग इन भविष्यवाणियों पर विचार करने से डूबने से बच जाएंगे। ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं आक्रमण पर आक्रमण करूंगा यहां तक कि मैं तेरी सच्चाई दिलों में बिठा दूंगा।

अत: हे मौलवियो! यदि तुम्हें ख़ुदा से लड़ने की शक्ति है तो लड़ो। मुझ से पहले एक ग़रीब इन्सान मरयम के बेटे से यहूदियों ने क्या कुछ न किया और किस प्रकार अपने गुमान में उसे सूली दे दी। परन्तु ख़ुदा ने उसे सूली की मृत्यु से बचाया। और या तो वह युग था कि उस को केवल एक मक्कार और झूठा समझा जाता था और या वह समय आया कि दिलों में उसकी इतनी श्रेष्ठता पैदा हो गयी कि अब चालीस करोड़ इन्सान उसे ख़ुदा मानते हैं। यद्यपि उन लोगों ने कुफ्र किया जो एक इन्सान को ख़ुदा बनाया, परन्तु यह यहूदियों का उत्तर है जिस व्यक्ति को वे लोग एक झूठे की तरह पैरों के नीचे कुचल देना चाहते थे वही यसू मरयम का बेटा इस श्रेष्ठता को पहुंचा कि अब चालीस करोड़ इन्सान उसे सज्दा करते हैं और बादशाहों की गर्दनें उस के नाम के आगे झुकती हैं। इसलिए यद्यपि मैंने यह दुआ की है कि मैं यसू बिन मरयम की तरह शिर्क की उन्नति का माध्यम न ठहराया जाऊं। और मैं विश्वास रखता हूं कि ख़ुदा तआला ऐसा ही करेगा। परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और मेरा प्रेम हृदयों में बिठाएगा। और मेरे सिलसिले को समस्त पृथ्वी पर फैला देगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़े को विजयी करेगा तथा मेरे फ़िर्क़े के लोग ज्ञान और मारिफ़त में इतनी श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश, अपने तर्कों तथा निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे और प्रत्येक क़ौम इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फैलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और विपत्तियां आएंगी परन्तु ख़ुदा तआला सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे'**....शेष**

(तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 16-20)

सम्पादकीय रमज़ान का महीना कैसे गुज़ारें

जिस प्रकार भौतिक ऋतुओं में वसंत ऋतु होती है, उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत का वसंत रमज़ान का महीना है। रमज़ान को "सभी महीनों का सरदार कहा जाता है। यह महीना ढेर सारी खुशियों का महीना है। चौदह सौ वर्षों से लाखों-करोड़ों सालेह और नेक लोग इसकी बरकतों के साक्षी रहे हैं।

प्रिय पाठको ! हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमारे जीवन में एक बार फिर यह आध्यात्मिक वसंत आया है। नहीं तो कई ऐसे भी थे जो इस बसंत से पहले हमसे जुदा हो गए और इस संसार को छोड़ गए। इसलिए हमें खुश होना चाहिए कि ये दिन हमारे जीवन में वापस आ गए हैं।

क़ुरआन में रोज़े रखने का आदेश इस प्रकार मिलता है :-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

अर्थात - हे ईमान वालो तुम पर इसी तरह रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

हज़रत आईशा रज़ि बयान फ़रमाती हैं: रमज़ान में तो आप (स.अ.व.) कमर हिम्मत कस लेते थे और पूरी कोशिश और मेहनत करते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रमज़ान के दिनों के बारे में फ़रमाते हैं: "मेरी तो ये हालत है कि मरने के क़रीब हो जाऊं तब रोज़ा छोड़ता हूँ। तबीयत रोज़ा छोड़ने को नहीं चाहती। ये मुबारक दिन हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल-ओ-रहमत के उतरने के दिन हैं।' (अलहकम 24 जनवरी 1901 ई)

यह तिलावत क़ुरआन-ए-करीम और दुआओं और ज़िक्र इलाही के ख़ास दिन हैं

हजरत मिर्जा बशीर अहमद साहिब फरमाते हैं: इस महीने में पवित्र कुरान की तिलावत पर विशेष ध्यान देना चाहिए। और कुरान के दो दौर पूरे करना बेहतर है, नहीं तो कम से कम एक तो होना ही चाहिए। और रहमत की हर आयत पर ख़ुदा की रहमत मांगी जाए और पीड़ा की हर आयत पर क्षमा मांगी जाए। इस महीने में दुआ और ख़ुदा की याद पर बहुत ज़ोर देना चाहिए और प्रार्थना के समय दिल में एक स्थिति बनाने की कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह के सामने बैठे हैं, यानी अल्लाह हमें देख रहा है और हम अल्लाह को देख रहे हैं। सामान्य रूप से ये दुआएं करनी चाहिए رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّار और अंत:करण की पवित्रता के लिए, "لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ दुआ करनी चाहिए इसका असाधारण प्रभाव पड़ता है। और अल्लाह की मदद के लिए يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ نَسْتَغِيْثُ सबसे सफल दुआओं में से एक है। और सूरह अल-फ़ातिहा दुआओं का मुखिया है।

कसरत के साथ दुरूद पढ़ना चाहिए: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं: "बरकतें प्राप्त करने के लिए कसरत के साथ दुरूद पढ़ना अव्वल दर्जा की तासीर रखता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं कि एक रात मैंने इस कसरत से दुरूद पढ़ा कि मेरा दिल-ओ-सीना मुअत्तर हो गया। इस रात ख़ाब में देखा कि फ़रिश्ते नूर की मुश्कें भर-भर के मेरे मकान के अंदर आ रहे हैं। उनमें से एक ने कहा कि ये नूर उस दुरूद का प्रतिफल है जो तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भेजा है।" (रोज़ाना अलफ़ज़ल रब्वाह 9 मार्च 1960)

रमज़ान में बहुत अधिकता से नफल नमाज़ पढ़नी चाहिए: रात की तहज्जुद के अलावा भी हर नमाज़ के समय पहले या बाद में नफल की नमाज़ ज़रूर पढ़नी चाहिए। नफल नमाज़ से इन्सान ख़ुदा के बहुत करीब हो जाता है।

रमज़ान क़बूलियत दुआ के ख़ास दिन हैं: अल्लाह तआला क़ुरआन में फरमाता है कि:

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ (अर्थात जब मेरा बंदा मेरे बारे में पूछे तो कह दो मैं निकट हूँ)

अत: रमज़ान का महीना दुआओं की क़बूलीयत के साथ निहायत गहरा ताल्लुक़ रखता है। यही वो महीना है जिसमें दुआ करने वालों के मुतल्लिक़ अल्लाह तआला ने फामय है कि मैं करीब हूँ। तो अगर वो क़रीब होने पर भी न मिल सके तो और कब मिल सकेगा। अत: हमें इस महीने में बहुत दुआ करनी चाहिए।

बच्चों को सहरी के वक़्त उठा कर नवाफ़िल पढ़ने की आदत डाली जाये: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "दूसरी बात रमज़ान में ये है कि बच्चों को सहरी के वक़्त उठा कर खाने से पहले नवाफ़िल पढ़ने की आदत डाली जाये। कादियान में यही दस्तूर था जो बहुत ही ज़रूरी और मुफ़ीद था। जिसे अब बहुत से घरों में छोड़ दिया गया है। कादियान में ये बात राइज थी कि रोज़ा शुरू होने से पहले बच्चों को बिल्कुल उस वक़्त नहीं उठाते थे कि सिर्फ खाने का वक़्त रह जाये बल्कि लाज़िमन इतनी देर पहले उठाते थे कि बच्चा कम से कम दो-चार नवाफ़िल पढ़ ले। अत: माएं बच्चों को खाना नहीं देती थीं जब तक पहले नफ़ल पढ़ने से फ़ारिग़ ना हो जाएं। सबसे पहले उठ कर वुज़ू करवाती थीं और फिर उनको नवाफ़िल पढ़ाती थीं ताकि उनको पता लगे कि रोज़ा का असल मक़सद रूहानियत हासिल करना है।

रमज़ान में झूठ से छुटकारा पाने की कोशिश करें क्योंकि जो शख़्स झूठ बोलने से नहीं बचता अल्लाह तआला को उस के भूखा प्यासा रहने की कोई ज़रूरत नहीं।

रोज़ा सेहत और तंदरुस्ती की गारंटी देता है, सेहरी और इफ्तार में संयम का ध्यान रखें, इसी तरह इस्तगफार बहुत करें। 13-14 की आयु से बचों को भी रोज़ा रखने की आदत डालनी चाहिए इससे पहले नहीं। अत: तमाम मुसल मानों को इस महीने को ग़नीमत समझ कर इस का हक्क अदा कने की कोशिश करनी चाहिए। हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको इस रमज़ान से फाइदा उठाने की भरपूर तौफीक मिलती रहे। आमीन

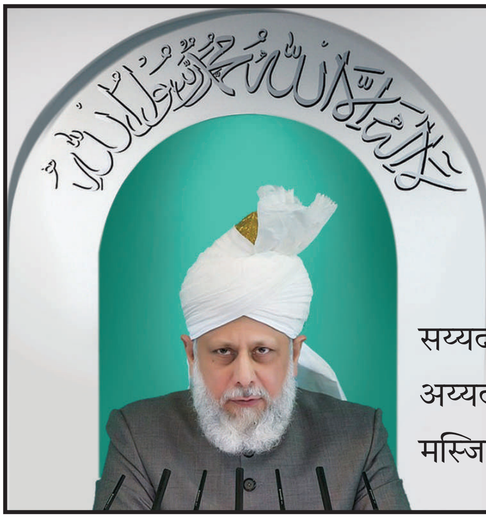

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11.03.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का एक अत्यधिक बड़ा काम ख़िलाफ़त के चुनाव के समय मुस्लिम उम्मत को एकता एवं सहमति की लड़ी में पिरोना है।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. को ख़िलाफ़त के बाद पेश आने वाली कठिनाईयों का संक्षिप्त वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत अबू बकर रज़ी. को ख़िलाफ़त के बाद जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, उनका वर्णन हो रहा था। उनमें पहली कठिनाई जो बयान की गई थी वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन का दु:ख था। यह पहला संकीर्ण तथा भयावह अवसर था जब सारे सहाबा दु:ख के कारण दीवाने हो रहे थे। हज़रत उमर रज़ी. तो तलवार लेकर खड़े हो गए थे कि यदि किसी ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहान्त हो गया है तो मैं उसका सिर शरीर से अलग कर दूँगा। उस समय हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हो चुका है और जो कोई अल्लाह तआला से मुहब्बत करता है वह ख़ुश हो जाए कि अल्लाह तआला जीवित है एवं कभी नहीं मरेगा। बावजूद उस अत्यंत स्नेह के जो आप रज़ी. को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से था, आप रज़ी. ने तौहीद ही का पाठ पढ़ाया, अत्यंत साहस तथा विवेक से सहाबियों को सांत्वना दी। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वह विचार धारा जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन के बारे में कुछ सहाबियों के दिल में पैदा हो गई थी (हज़रत अबू बकर रज़ी. ने) एक सार्वजनिक सभा में क़ुर्आन शरीफ़ की आयत का हवाला देकर उन समस्त विचार धाराओं को दूर कर दिया।

दूसरा बड़ा काम जो आप रज़ी. ने किया वह ख़िलाफ़त के चुनाव के समय मुस्लिम उम्मत को एकमत

तथा एकता की लड़ी में पिरोना है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन से जो दूसरी बड़ी शंका उत्पन्न हुई वह सक़ीफ़ा बनी सअदा में अन्सार का इज्तिमा था। अन्सार किसी रूप में मुहाजिरों में से ख़लीफ़: स्वीकार करने को तय्यार नहीं थे। उस संकीर्ण अवसर पर अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ी. की ज़बान में वह प्रभाव उत्पन्न किया कि मतभेद एवं बिखराव की अवस्था स्नेह एवं एकता में बदल गई।

तीसरा बड़ा मामला जिसे आप रज़ी. ने तुरन्त संभाला वह उसामा रज़ी. की सेना रवानगी का मामला था। यह सेना शाम देश की सीमा पर रोमियों से लड़ाई के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तय्यार की थी। इस सेना का नेतृत्व हज़रत उसामा रज़ी. को सौंपते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ी. को विस्तार पूर्वक निर्देश भी दिए थे। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने पवित्र हाथों से एक झंडा भी बांधा। उस सेना में हज़रत अबू बकर रज़ी. व उमर रज़ी. सहित बड़े बड़े सहाबी शामिल थे। जब कुछ लोंगों ने इस प्रकार की बातें कीं कि यह लड़का महान मुहाजिर सहाबियों पर अमीर बनाया जा रहा है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े नाराज़ हुए। हज़रत उसामा रज़ी. सेना को लेकर जब रवाना हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अन्तिम की बीमारी से ग्रस्त थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन पर यह सेना जुर्फ याज़ी ख़श्ब नामक स्थान से वापस मदीना आ गया। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत कर ली गई तो आप रज़ी. ने आदेश दिया कि उसामा का अभियान अवश्य पूरा होगा। उसामा की सेना में से कोई व्यक्ति मदीना में शेष न रहे। इस सेना में सैनिकों की संख्या तीन हज़ार बयान की जाती है तथा एक अन्य रिवायत में सात सौ की संख्या का भी वर्णन मिलता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन पर जहाँ अरब क़बीलों में इस्लाम से विमुखता का विद्रोह फैल रहा था वहीं यहूदी व नसरानी भी अपनी गर्दनें उठा उठा कर देख रहे थे। इन स्थितियों में हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस सेना को भेजने की कार्यवाही को रोक लेने का सुझाव दिया गया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने ख़ुदा की क़सम खा कर फ़रमाया कि यदि मुझे विश्वास हो कि जंगली जानवर मुझे नोच खांएगे तो भी मैं उसामा की सेना के विषय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा जारी निर्णय को लागू करके रहूँगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु उसामा की सेना को भिजवाने की पृष्ठभूमि के विषय में फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात अबू क़हाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम यह करे कि जिस सेना को रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रवाना होने का आदेश दिया था, उसे रोक ले? ख़ुदा की क़सम! यदि दुश्मन की सेनाएँ मदीना में घुस आँए तथा कुत्ते मुसलमान महिलाओं के शवों को घसीटते फिरें तब भी मैं इस सेना को नहीं रोकूँगा ...यह साहस तथा निर्भयता हज़रत अबू बकर रज़ी. में इसी कारण से पैदा हुई कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि- مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰہِ وَالَّذِینَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ जिस तरह बिजली के साथ हलका सा तार भी छू जाए तो उसमें महामान्य शक्ति पैदा हो जाती है, इसी प्रकार मुहम्मद रसूलुल्लाह की संगत के परिणाम स्वरूप आप स. के मानने वाले भी أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ की पुष्टि करने वाले बन गए।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसामा के नेतृत्व में सेना भिजवाने के बारे में सिर्रुलख़िलाफ़:

नामक पुस्तक में फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ तथा यह सूचना मक्का तथा वहाँ के गवर्नर अताब बिन उसैद को पहुंची तो अताब छिप गया और मक्का काँप उठा, सम्भव था कि उसके निवासी इस्लाम से विमुख हो जाते।

ऐसी स्थिति में लोगों ने हज़रत उमर रज़ी. से निवेदन किया कि वे हज़रत अबू बकर रज़ी. को उसामा की सेना को रवाना कराने से रोक लें अथवा यदि सेना को रवाना करें तो उसामा से बड़ी आयु के किसी व्यक्ति को अमीर नियुक्त फ़रमाएँ। हज़रत उमर रज़ी. ने जब यह बात हज़रत अबू बकर रज़ी. से कही तो आप रज़ी. ने उमर रज़ी. की दाढ़ी को पकड़ा और कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब! तेरी माँ तुझे खोए, रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अमीर नियुक्त किया है और तुम मुझे कहते हो कि मैं उसे नेतृत्व से हटा दूँ।

इस सेना की रवानगी का दृश्य भी अत्यंत अद्भुत था। उस समय हज़रत उसामा रज़ी. सवार थे जबकि हज़रत अबू बकर रज़ी. पैदल चल रहे थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उसामा रज़ी. से कहा कि यदि आप उचित समझें तो हज़रत उमर रज़ी. को मेरे कामों में सहयोग के लिए छोड़ दें, हज़रत उसामा रज़ी. ने अनुमति दे दी। इसके बाद हज़रत उमर रज़ी. जब भी हज़रत उसामा रज़ी. से मिलते तो कहते- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاَمِيْرُ

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उसामा की सेना को भिजवाते समय सम्बोधन करते हुए फ़रमाया कि मैं तुम्हें दस बातों की नसीहत करता हूँ- तुम विश्वासघात न करना, युद्ध में हाथ आए माल की चोरी मत करना, वादे के विरुद्ध मत करना, किसी शव को नहीं कुचलना, किसी छोटे बच्चे महिला अथवा वृद्ध पुरुष की हत्या मत करना, किसी फलदार वृक्ष को न काटना, किसी बकरी गाय अथवा ऊँट की खाने के अतिरिक्त हत्या न करना, चर्च के लिए आरक्षित सन्यासियों को छोड़ देना, यदि तुम्हें कोई व्यक्ति कुछ खाने के लिए भेंट करे तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लेना, ऐसे लोग जो बीच में से अपने बाल साफ़ किए हों तथा चारों ओर पट्टियों के रंग में बाल हों, उन्हें मत छोड़ना। ये लोग मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध के लिए उकसाने वाले तथा युद्ध में भाग लेने वाले लोग थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उसामा रज़ी. से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तुम्हें करने का आदेश दिया था, वह अवश्य करना। यह सेना रबीउल अव्वल के अन्त में रवाना हुई तथा बीस रातों की यात्रा के बाद उबना वालों पर अचानक हमला करके उनसे पिछले अत्याचारों का बदला लेने में सफल रही। युद्ध में हाथ आई अत्यधिक सम्पत्ति प्राप्त करके जब हज़रत उसामा रज़ी. वापस मदीना पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ी. मुहाजिरों तथा मदीना वालों के साथ उनसे मिलने के लिए बाहर निकले।

उसामा की सेना को भिजवाने से बड़े दूर गामी परिणाम प्रकट हुए। समस्त लोगों ने जान लिया कि ख़लीफ़: का निर्णन कितना उचित, समय पर तथा लाभकारी था और वे जान गए कि हज़रत अबू बकर रज़ी. अति दूर दृष्टि रखने वाले तथा विवेक वाले थे। अरब के क़बीलों पर मुसलमानों की धाक बैठ गई। अरब की सीमाओं पर दृष्टि लगाए विदेशियों पर मुसलमानों का रौब बैठ गया। प्रसिद्ध बर्तानवी लेखक सर थामिस वाकर ऑर्नाल्ड लिखता है कि यह उन भव्य एवं विराट अभियानों में से पहला अभियान था जिसके द्वारा मुसलमान शाम, ईरान तथा उत्तरी अफ़रीक़ा पर विजय पा गए तथा पुराने फ़ारसी शासन को नष्ट किया तथा रोमी शासन

के पंजे से उसके सर्वोत्तम राज्यों को स्वतंत्र करा लिया।

एक चुनौती जो हज़रत अबू बकर रज़ी. को पेश आई वह ज़कात के धन को रोकने तथा इंकार करने का विद्रोह था। इस्लाम से विमुख होने की विभिन्न अवस्थाओं में से एक अवस्था यह थी कि लोग इस्लाम पर तो स्थापित रहे किन्तु ज़कात के अनिवार्य होने तथा उसे अवश्य रूप में ख़लीफ़: को ही देने से इंकार किया। बड़े बड़े सहाबियों से विचार विमर्श के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया- वल्लाह! यदि ज़कात देने के इंकारी लोग एक रस्सी देने से भी इंकार करेंगे जिसे वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में दिया करते थे तो भी मैं उनसे युद्ध करूँगा।

ज़कात का इंकार करने वालों के व्यवहार, उनके साथ लड़ाई तथा उसके परिणाम का वर्णन आगे बयान करने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज फिर मैं दुनिया के मौजूदा हालात के बारे में दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। ख़ुदा दोनों ओर के शासकों को बुद्धि दे तथा ये लोग मानवता का ख़ून करने से रुक जाएँ। मुसलमानों को भी इस युद्ध से पाठ सीखना चाहिए कि किस तरह ये लोग एक हो गए हैं परन्तु मुसलमान बावजूद कलिमा पढ़ने के कभी एक नहीं होते। एक देश का विनाश किया, इराक़ नष्ट कराया, सीरिया नष्ट कराया, यमन का विनाश हो रहा है तथा गैरों से कराते हैं और ख़ुद भी कर रहे हैं, बजाए इसके कि एक हों। कम से कम मुसलमान यह एकता का ही पाठ इनसे सीख लें। अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी दया करे, मुसलमानों पर भी रहम करे, उम्मते मुस्लिमा पर कृपा करे तथा यह उसी अवस्था में हो सकता है जब ये लोग ज़माने के इमाम को मानने वाले भी हों और जो इसी उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भेजा है। अल्लाह तआला बुद्धि तथा समझ प्रदान करे तथा साथ ही जहाँ ये अपनी हालतें ठीक करने वाले हों वहाँ दुनिया के लिए दुआ भी करें और अपने माध्यम तथा साधनों को उपयोग में ला कर दुनिया को युद्धों से रोकने वाले भी हों, न कि स्वयं युद्ध में शामिल होने वाले।

ख़ुत्ब: के अंत में हुज़ूर अनवर ने मोहतरमा सय्यदा क़ैसरा ज़फ़र हाशमी साहिबा पतनी ज़फ़र इक़बाल हाशमी साहब लाहौर का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ गायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया। मरहूमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत सय्यद मुहम्मद अली बुख़ारी साहब की पोती थीं। मरहूमा जमाअत की सेवा करने वाली, नमाज़ रोज़े की पाबन्द, दुआएँ करने वाली, मेहमानों की देख भाल करने वाली, अति संतोषी एवं आभार प्रकट करने वाली थीं। परिजनों में पति के अतिरिक्त पाँच बेटे तथा एक बेटी शामिल हैं। मरहूमा के एक बेटे महमूद इक़बाल हाशमी साहब, कैम्प जेल लाहौर में असीर राह-ए-मौला (अल्लाह की राह में संघर्ष करते हुए बन्दी बनाए गए) हैं। इनको जेल से निकले की अनुमति तो नहीं मिली किन्तु इनके साथ प्रशासन ने यह व्यवहार किया कि वालिदा की मय्यत को जेल ले जाकर उन्हें वालिदा का अन्तिम दर्शन करा दिया। अल्लाह तआला उनकी भी रिहाई का जल्दी सामान फ़रमाए, आमीन। हुज़ूर अनवर ने मरहूमा की मग्फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

☆ ☆ ☆

कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

और उनके आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति ईमान नहीं रखता कि (ईसा) मसीह परिंदों का पैदा करने वाला और मुर्दों को जीवित करने वाला और सम्मान में विशिष्ट तथा अद्वितीय और शैतान के स्पर्श से सुरक्षित था और इस विशेषता में नबियों में से कोई उसके समान नहीं है।

इस आरोप का उत्तर यह है कि तू जान ले कि हम (ईसा अलैहिस्सलाम के) मुर्दों के जीवित करने के चमत्कार तथा चमत्कार पूर्वक पैदा करने पर ईमान लाते हैं परन्तु हम उसे वास्तविक तौर से जीवित करने तथा वास्तविक तौर पर पैदा करना नहीं मानते जो अल्लाह के जीवित करने और अल्लाह के पैदा करने के समान हो। और यदि ऐसा होता तो पैदा करने और जीवित करने में समानता हो जाती हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि-

فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ (आले इमरान-3/50)

(अर्थात् वह अल्लाह के आदेश से परिंदा (अर्थात रूहानी परिंदा) बन जाएगा) और यह नहीं फ़रमाया कि- فَيَكُوْنُ حَيًّا بِاِذْنِ اللّٰهِ कि वह अल्लाह के आदेश से जीवित हो जाता था। और न ही यह कहा है कि- فَيَصِيْرُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ अर्थात वह अल्लाह के आदेश से पक्षी हो जाता है। निस्सन्देह ईसा के परिंदे का उदाहरण मूसा अलैहिस्सलाम के डंडे के समान है जो एक दौड़ने वाले सांप के समान प्रकट हुआ था परन्तु उसने हमेशा के लिए अपनी पहली अवस्था को नहीं छोड़ा था और इसी प्रकार तहक़ीक़ करने वालों ने कहा है कि ईसा का पक्षी लोगों की आंखों के सामने उड़ता था और जब वह आंखों से ओझल हो जाता तो गिर पड़ता और फिर अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता था। तो उसे वास्तविक जीवन कहां प्राप्त हुआ? और मुर्दे जीवित करने की वास्तविकता भी कुछ ऐसी ही थी अर्थात् उसने मुर्दे को पूर्णत: जीवित नहीं किया बल्कि मुर्दे के जीवन का जलवा आपकी पवित्र रूह के प्रभाव के कारण दिखाई देता था और मुर्दा उस समय तक जीवित रहता था जब तक ईसा उसके पास खड़े या बैठे रहते परन्तु जब वह चले जाते तो मुर्दा अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता और मर जाता। अत: यह जीवित करना चमत्कारिक था न कि वास्तविक और अल्लाह जानता है कि यही वास्तविक सच्चाई है इसमें लोगों के गलत बयानों की मिलावट हुई है और उन्होंने जो चाहा उस में बढ़ोतरी कर दी। जैसा कि हर ऐसे व्यक्ति पर यह बात छुपी नहीं जिसे तनिक भर भी ज्ञान और विवेक प्राप्त है। अत: आयतों के भाव और उनके अर्थ ज्ञात करने में गंभीर चिंतन कर ताकि तुझसे गुमराही और अंधकार दूर हो जाएं और तू विवेकवान लोगों में से हो जाए।

और उनका एक ऐतराज़ एक यह भी है कि वे कहते हैं कि अल्लाह ने क़यामत के निकट मसीह के अवतरण की सूचना दी है जैसा कि उसने फ़रमाया -

وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ (ज़ुखरुफ - 43/62)

(अर्थात- और वह अन्तिम घड़ी का ज्ञान प्रदान करता है)

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि अल्लाह ने وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ फ़रमाया है وَ اِنَّهٗ سَيَكُوْنُ عِلْمًا لِّلسَّاعَةِ नहीं फ़रमाया। अतः यह आयत दलालत करती है कि वह एक दृष्टिकोण से क़यामत का निशान थे जो उन्हें व्यवहारिक रूप से प्राप्त था न कि उन्हें बाद के किसी समय में प्राप्त होना था। और वह प्राप्त पहलू उनका बिना बाप के जन्म था। और इसका विवरण यह है कि यहूदियों का एक संप्रदाय अर्थात सदूकी क़यामत के अस्तित्व के इन्कारी थे। तो अल्लाह ने उन्हें कुछ नबियों के द्वारा ख़बर दी कि उनकी क़ौम से एक लड़का बिना बाप के पैदा होगा। और वह उनके लिए क़यामत के अस्तित्व पर एक निशान होगा। अतः उसने आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ में इसी की ओर संकेत किया है और इसी प्रकार इस आयत وَ لِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ (अनुवाद- ताकि हम उसे लोगों के लिए निशान बनाएं। मरियम- 19/22) में भी संकेत है अर्थात हम उसे लोगों (अर्थात सदूकियों) के लिए निशान बनाएंगे।

और कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ का सर्वनाम क़ुरआन की ओर लौटता है। अतः क़ुरआन ने बहुत सी सृष्टि को जीवित किया और उन्हें क़ब्रों से उठाया है। अतः यह रूहानी तौर पर उठाया जाना दलील है शारीरिक रूप से उठाए जाने पर अर्थात क़यामत पर जैसा कि "मआलिमुत्तन्ज़ील" आदि में है। तो सारांश यह है कि आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ मसीह के अवतरण पर बिल्कुल दलालत नहीं करती बल्कि वह इन्कार करने वालों का मुंह एक मौजूद प्रमाणित दलील से बंद करती है। इसीलिए अल्लाह ने "फला तमतरुन्ना बिहा" फरमाया है। और किसी ऐसे कथन को निशान नहीं कहा जा सकता जिसका बाद में अस्तित्व ही सिद्ध न हो और जिसे विरोधियों में से किसी ने भी न देखा हो।

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि औलिया दावा नहीं किया करते और न यह कहते हैं कि हम यह हैं और वह हैं बल्कि उनके हालात और उनकी चाल-ढाल स्वयं उनके औलिया होने पर दलालत करती है। इसलिए ऐसा व्यक्ति जो दावा करे वह वलीउल्लाह नहीं होता बल्कि निस्सन्देह झूठों में से होता है।

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि पहले और बाद में आने वाले इमामों ने विलायत (ख़ुदा का वली होने) के इज़हार को **तह्दीस-ए-नेमत** (अल्लाह के उपकार की चर्चा करने) के तौर पर जाइज़ क़रार दिया है। और शैख़ (अब्दुल क़ादिर) जीलानी और मुजद्दिद (अहमद) सरहिन्दी की पुस्तकें इससे भरी पड़ी हैं। और अल्लाह तआला ने وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ फ़रमाया है (अर्थात- हर एक

नेमत जो ख़ुदा से तुझे मिले उसको लोगों के समक्ष वर्णन कर। (ज़ुहा- 93/12) और इब्ने जरीर ने अपनी व्याख्या में अबू युसरा गफ़्फ़ारी से रिवायत की है कि सहाबा किराम धन्यवाद करने को केवल धन्यवाद के इज़हार की शर्त के साथ ही धन्यवाद करना मानते थे क्योंकि ख़ुदा का आदेश है-

لَئِنۡ شَکَرۡتُمۡ لَاَزِیۡدَنَّکُمۡ وَ لَئِنۡ کَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِیۡ لَشَدِیۡدٌ

(इब्राहीम- 14/8)

(अनुवाद- अगर तुम मेरा धन्यवाद करोगे तो मैं अपनी दी हुई नेमत को और बढ़ाऊंगा और यदि अहसान फ़रामोशी करोगे तो मेरा अज़ाब बहुत कठोर है। और देलमी ने (अपनी किताब) 'फिरदोस' में और अबू नईम ने अपनी किताब 'हिल्यतुल ओलिया' में रिवायत की है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब मिंबर पर चढ़े और फ़रमाया कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह को शोभानीय हैं जिसने मुझे ऐसा बनाया कि मुझसे बढ़कर इस समय कोई दूसरा नहीं। इस पर लोगों ने आपसे इस कथन के बारे में पूछा। तो आपने फ़रमाया कि मैंने यह केवल अल्लाह तआला की नेमत के धन्यवाद के तौर पर कहा है और यह जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है فَلَا تُزَکُّوۡۤا اَنۡفُسَکُمۡ (अनुवाद- तुम अपने आप को पवित्र मत कहो। (अन्नजम- 53/33) तो स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत का इज़हार के बीच अंतर है, यद्यपि यह दोनों बाहरी रूप से देखने में सामान लगते हैं। तो जब तू किसी विशेषता को अपनी ओर मंसूब करे और स्वयं को कुछ समझने लगे और तू उस स्रष्टा को भूल जाए जिसने तुझ पर उपकार किया तो यह स्वयं को पवित्र ठहराना है। परन्तु जब तू अपने गुणों को अपने रब की ओर मंसूब करे और हर नेमत को उसकी ओर से समझे और गुण को देखते समय स्वयं को न देखे बल्कि हर तरफ अल्लाह की ताकत और शक्ति और उसके उपकार और कृपा देखे और अपने आपको एक ऐसे मुर्दे के समान समझे जो मृतस्नापक (नहलाने वाले) के हाथ में हो (जिसका स्वयं पर कोई वश नहीं चलता) और तू स्वयं की ओर कोई विशेषता मंसूब न करे, तो यह नेमत का इज़हार है। अत: जिन लोगों के दिलों में बीमारी है वह जल्दी से ऐतराज़ करने की ओर भागते हैं और वह शुक्रगुज़ार अवतारों तथा झूठे दिखावा करने वालों के बीच अंतर नहीं करते और इस प्रकार उन दोनों (अर्थात स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत के इज़हार) के एक जैसे होने की वजह से मामला उन पर संदिग्ध हो जाता है। उनके ऐतराज़ों के उत्तर में यह हमारा अंतिम कथन है और अल्लाह हमारे तथा उनके बीच निर्णय करेगा और वह बेहतर निर्णय करने वाला है।

और उनके आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति फ़रिश्तों को सूर्य, चन्द्रमा और सितारों की रूहें समझता है। तो इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि वह इस बारे में धोखे में पड़े हुए हैं। अल्लाह जानता है कि मैं सितारों की रूहों को फ़रिश्ते नहीं कहता बल्कि मेरे रब ने मुझे यह ज्ञान दिया है कि फ़रिश्ते- सूर्य, चन्द्रमा, सितारों और आसमान और धरती में मौजूद हर चीज़ की व्यवस्था करने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि :-

اِنۡ کُلُّ نَفۡسٍ لَّمَّا عَلَیۡہَا حَافِظٌ (अत्तारिक - 86/5)

(अर्थात कोई एक जान भी ऐसी नहीं जिस पर कोई संरक्षक नियुक्त न हो।) फिर फ़रमाया :- فَالۡمُدَبِّرٰتِ اَمۡرًا (अर्थात- क़सम है किसी महत्वपूर्ण काम के मंसूबे बनाने वालियों की। सूरह अन्नाज़िआत- 79/6) और उन जैसी अन्य बहुत सी आयतें क़ुरआन में हैं तो विचार विमर्श करने वाले के लिए ख़ुशख़बरी है।

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि उनके बड़े मशाइख़ में से एक ने यह कहा है कि मैंने अल्लाह के रसूल को स्वप्न में देखा और आपसे इस व्यक्ति (अर्थात इस पुस्तक के लेखक) के बारे में पूछा कि क्या वह व्यक्ति झूठा है या सच्चा? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह सच्चा है और अल्लाह की ओर से है परन्तु अल्लाह उससे हंसी ठट्ठा कर रहा है।[1]★

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि उस बुज़ुर्ग ने अपने दो संदेशवाहक मेरी ओर भेजे। उनमें से एक का नाम ख़लीफ़ा अब्दुल लतीफ और दूसरे का नाम ख़लीफ़ा अब्दुल्ला अरब है। वे मेरे पास फिरोज़पुर में आए और उन्होंने कहा कि हमें आपकी ओर हमारे बुज़ुर्ग पीर झंडे वाले ने यह कह कर भेजा है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और मैंने हुज़ूर से आपके बारे में पूछा और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए कि क्या वह झूठा है या सच्चा? तो अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि- اِنَّہٗ صَادِقٌ وَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰہ (अर्थात वह सच्चा है और अल्लाह की ओर से है।) तो मैंने पहचान लिया कि आप स्पष्ट रूप से सच्चाई पर हैं और उसके बाद हम आपके बारे में कोई सन्देह नहीं करते और न आपकी शान में हमें कोई संशय है। और हम आपके आदेश के अनुसार पालन करेंगे। यदि आप हमें आदेश दें कि अमेरिका चले जाओ तो हम वहां चले जाएंगे और हमारा अपने ऊपर कोई अधिकार न होगा और अल्लाह ने चाहा तो आप हमें प्रसन्नता पूर्वक आज्ञापालन करने वालों में से पाएंगे। यह वह बात है जो उस बुज़ुर्ग के दोनों संदेशवाहकों ने कही और यह दोनों ही अपनी क़ौम के सम्मानित लोगों में से हैं। बल्कि वह व्यक्ति जिसका नाम अब्दुल्ला अरब है, प्रसिद्ध व्यापारियों में से है और अल्लाह ने उसे अधिकता से माल और शेष रहने वाले सतकर्म प्रदान किए हैं। और मेरा विचार है कि वह नेक आदमी है, झूठ नहीं बोलता और उसने अल्लाह के मार्ग में और धार्मिक कार्यों में बहुत सा माल खर्च किया है और उसे इस्लाम की सरबुलंदी की बहुत चिंता है और वह मेरे पास केवल सच्चाई और निष्ठा के साथ आया था और वे दोनों नहीं आए जब तक कि उनके

★**हाशिया :-** उस बुज़ुर्ग का नाम पीर झंडेवाला है और वह सिंध के क्षेत्र के रहने वाले हैं। और मैंने सुना है कि वह इस इलाके के प्रसिद्ध मशा इख़ों में से हैं। और उनके मुरीदो की जमाअत एक लाख के लगभग बल्कि इससे भी अधिक है। इसी से।

शैख़ ने उनको मेरे पास नहीं भेजा। अत: तू ईमानदारी और न्याय के साथ विचार कर कि क्या उनके शैख़ ने उन्हें इतने दूर-दराज़ इलाके से मार्ग के व्यय और गर्मी के मौसम में सफर की कठिनाइयां उठाने के बाद इसलिए भेजा था कि वे दोनों उस (शैख़) की ओर से हंसी की बात पहुंचाएं और वे दोनों सुन्नत के खिलाफ नेक लोगों को कष्ट दें? वे दोनों जीवित मौजूद हैं और शैख़ साहब भी जीवित मौजूद हैं। अत: तू उनसे और उनके शैख़ से पूछ ले अगर तू सन्देह करने वालों में से है। इसके अतिरिक्त अल्लाह की ओर हंसी-ठठ्ठा संबद्ध करना एक ऐसी बात है जिसकी सच्चाई को तू भली-भांति जानता है और तुझे ज्ञात है कि हंसी-ठठ्ठा झूठ की एक प्रकार है और अल्लाह तआला की ओर झूठ संबद्ध करना सही नहीं। क्योंकि झूठ अपवित्र तथा दोषों में से है और समस्त दोष व्यक्तिगत रूप से, बौद्धिक रूप से और उर्फ़ी रूप से अल्लाह तआला के लिए असंभव हैं और उनकी इस बात पर सहमति है कि अल्लाह तआला झूठ नहीं बोलता और वचन भंग नहीं करता। झूठ बोलना उसके लिए असंभव है क्योंकि झूठ में बेबसी, मूर्खता और अभद्रता की निशानी पाई जाती है और फिर उसमें कमी-बेशी होती है और अल्लाह तआला इन समस्त दोषों से और उनके हर प्रकार से रहित है। और अल्लाह तआला की भविष्यवाणियों, उसकी वह्यी तथा उसके इल्हाम में झूठ का औचित्य, बेहिसाब उपद्रवों की बुनियाद डाल देगा। शरहुल मवाकिफ के लेखक कहते हैं कि अल्लाह की ओर झूठ को संबद्ध करना सर्वसम्मति से वर्जित है और यदि (कल्पना के तौर पर) अल्लाह झूठा होता तो उसका झूठ अवश्य अनादि काल से होता जबकि मौत अल्लाह तआला के अस्तित्व के साथ स्थापित नहीं हो सकती तो झूठ उसकी अनादि विशेषताओं से कैसे संबद्ध हो गया जबकि वह सबसे अधिक सच्चा है।

{हमामतुल बुश्रा (हिन्दी) पृष्ठ- 177-212}

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

विश्व शान्ति के लिए जमाअत अहमदिया प्रमुख
हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद के विश्वव्यापी प्रयास

(लेखक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद मुरब्बी सिलसिला, एम ए)

आज दुनिया एक ऐसे भयंकर दौर से गुज़र रही है जहां मुटभेड़, बेचैनी और शरारत एक बाढ़ की तरह बढ़ती चली जा रही है। कुछ देशों में जनता आपस में ही लड़ाई और जंग कर रहे हैं और कुछ देशों में जनता सरकार से जूझ रही है या उसके विपरीत अधिकारी अपनी जनता के विरुद्ध खड़े हैं। आतंकवादी तत्व अपने विशिष्ट हितों को प्राप्त करने के लिए अराजकता और उपद्रव की आग भड़का रहे है और निर्दोष महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की अंधाधुंध हत्या कर रहे हैं। कुछ देशों में सियासी पार्टियां अपने हितों को प्राप्त करने के लिए आपस में मिल कर अपने देश की भलाई के लिए कार्य करने की बजाए एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। कुछ सरकारें और देश दूसरे देशों के प्राकृतिक संसाधनों के निरन्तर लालचों से देख रहे हैं दुनिया की बड़ी ताकतें अपनी श्रेष्ठता और वर्चस्व को क़ायम रखने के लिए अपने सभी प्रयास कर रही हैं और अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई रणनीति और हथकंडा उपयोग करने से परहेज़ नहीं करतीं।

वैश्विक वित्तीय संकट के कारण लगभग हर सप्ताह नए और पहले से बड़े जोखिम सम्मुख आ रहे हैं। इन दिनों को द्वितीय विश्व युद्ध से कुछ पहले के ज़माने से समानता करार दी जा रही है और स्पष्ट नज़र आ रहा है कि घटनाएं दुनिया को असामान्य तेज़ी से एक भयानक तीसरे विश्व युद्ध की दिशा में आगे धकेल रही हैं इस बात को बहुत तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है कि हालात तेज़ी से नियंत्रण से बाहर हो रहे हैं और लोग किसी ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो सामने आए और ऐसा ठोस और गंभीर मार्गदर्शन करे जो विश्वसनीय हो जिस की बातें मन और दिमाग़ दोनो पर समान प्रभावी हों और वह उन्हें एक किसी ऐसे पथ के मौजूद होने की उम्मीद दिलाए जो शांति का रास्ता हो। मौजूदा दौर में एक परमाणु युद्ध के परिणाम इतने भयानक और विनाशकारी होंगे कि उन की सही अर्थों में कल्पना की जानी संभव नहीं है।

ऐसे हालात में एक शांति का राजदूत जो मानवता के लिए बहुत अधिक हमदर्दी अपने अंदर रखता है इस दुखियारी मानवता को बचाने के लिए अकेला सामने आता है जिस का नूरानी चेहरा किसी को भी एक नज़र में अपना दीवाना बना दे। जिस की आवाज़ धीमी, लेकिन दिल तथा दिमाग़ पर जादू का असर करने वाली हो। जिस की नज़र बिजली की चमक अपने अन्दर समाए हुए हो और जिसकी एक मुस्कान पाने के बदले में हर कोई अपना सब कुछ क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो। जिसका साथ हर क़दम अन्धेरों के अथाह अंधेरे से निकाल कर सही प्रकाश की ओर ले आता हो। मेरा अभिप्राय अन्तिम युग के मसीह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हैं, जिन्होंने दुनिया में शांति की स्थापना के लिए अपने स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं की रोशनी और अंतिम युग के मसीह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के मार्गदर्शन में ऐसे आयोजन और ठोस कदम उठाए हैं जिस

का उदाहरण इस समय में नहीं मिलता।

आप ने ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस चुने जाने के बाद दुनिया में शांति के बारे में इस्लाम का संदेश पहुंचाने के लिए प्रिंट मीडिया और डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा एक अभियान शुरू किया। आप के मार्गदर्शन में जमाअत अहमदिया मुस्लिम के चैनलों ने ऐसी कोशिशें जारी रखी हुई हैं जिनसे इस्लाम की सच्ची और शांतिप्रिय शिक्षा का प्रचार हो रहा है। अहमदी मुसलमान मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दुनिया में शांति के संदेश लाखों बल्कि करोड़ों विज्ञापनों के द्वारा वितरण में लगे हुए हैं। धर्मों के मध्य धार्मिक सद्भाव और शांति की कांफ्रेसें आयोजित की जा रही हैं। कुरआन की प्रदर्शनियां लगाई जा रही हैं ताकि कुरआन का पवित्र संदेश दुनिया तक पहुंच सके इस मुबारक प्रयत्न से दुनिया भर की मीडिया से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है और यह साबित हो रहा है कि इस्लाम शांति, देशभक्ति और मानवता की सेवा का धर्म है।
आप ने शांति की स्थापना की इस कोशिश में दुनिया के हर वर्ग प्रत्येक स्तर तक अर्थात एक आम आदमी से लेकर दुनिया के बड़े बड़े पालसी बनाने वालों, सीनेटरों, पाल्टीशनज़, और शासकों को लक्ष्य किया। विनीत इस लेख में आपके द्वारा की गई कोाशिशों में से कुछ पर प्रकाश डालने की कोशिश करेगा:-

संसदों में संबोधन

आप ने विश्व के कई संसदों में जैस The British Parliament House Of Common ,Military Headquarters Koblenz Germany, Capital Hill ,Washington D.C, USA, Europion Parliament Brussels, Belgium, New Zealand Parliament, Canadian Parliament आदि कई जगह जाकर दुनिया में शांति की स्थापना के लिए भाषण दिए। विशेष कर के उनमें से कुछ का उल्लेख बतौर नमूना प्रस्तुत है।

The British Parliament HouseOf Common में सम्बोधन

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ब्रिटिश संसद The House of Common 2008 ई० में "वैश्विक संकट इस्लामी दृष्टिकोण" पर संबोधन किया। आप फरमाते हैं कि:
"वास्तविक न्याय इस बात की मांग करता है कि उन लोगों की भावनाओं और धार्मिक रीति-रिवाजों का भी आदर किया जाए। यही वह उपाय है जिससे लोगों की मानसिक शान्ति को क़ायम रखा जा सकता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब किसी व्यक्ति की मानसिक शान्ति को भंग किया जाता है तो उस समाज की मानसिक शान्ति भी प्रभावित होती है। ...... परन्तु धर्म के नाम पर यदि कोई ऐसी परम्पराएं हों जो दूसरों को हानि पहुंचाएं तथा राष्ट्रीय कानूनों के विपरीत हों तो ऐसी स्थिति में उस देश में कानून स्थापित करने वाले हरकत में आ सकते हैं क्योंकि यदि किसी धर्म में कोई अप्रिय परम्परा प्रचलित है तो यह परमेश्वर के किसी नबी की शिक्षा नहीं हो सकती। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति स्थापित करने के लिए यही मूल सिद्धान्त है।

कोई समाज, गिरोह या हुकूमत आप के धार्मिक कर्तव्यों को अदा करने में रोक बनती है और कल हालात आप के पक्ष में तबदील हो जाते हैं तो इस्लाम हमें यह शिक्षा देता है कि कभी भी अपने दिल में उन

के लिए द्वेष या घृणा न रखें। आप को कभी भी प्रतिशोध का ख़्याल नहीं आना चाहिए अपितु न्याय और समानता स्थापित करनी चाहिए। पवित्र क़ुरआन का कथन है -

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। (सूरह अलमाइदह आयत- 9)

फिर आप फ़रमाते हैं कि:-

"पवित्र क़ुरआन ने विश्व-शान्ति स्थापित करने के लिए बड़े ही सुनहरे सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि लालसा शत्रुता को जन्म देती है। कभी यह सीमाओं का अतिक्रमण करने के रूप में प्रकट होती या फिर प्राकृतिक सम्पदाओं पर अधिकार करने के रूप में अथवा दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए। और फिर यह शत्रुता अन्याय और अत्याचार की ओर ले जाती है। चाहे यह अत्याचार क्रूर निरंकुश शासकों की ओर से हो जो प्रजा के अधिकारों का हनन करते हैं तथा अपने व्यक्तिगत हितों के लिए अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं या फिर ये अत्याचार आक्रमणकारी सेना के द्वारा हों। प्राय: इन अत्याचारों के शिकार लोगों का चीख़ व पुकार और क्रोध बाह्य देशों को आवाज़ देता है।

बहरहाल इस्लाम के पैग़म्बर ने हमें निम्नलिखित सुनहरे सिद्धान्त सिखाए हैं कि अत्याचारी और पीड़ित दोनों की सहायता करो।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी रज़ि. ने पूछा कि - अत्याचार से पीड़ित की सहायता करना तो समझ में आता है परन्तु एक अत्याचारी की सहायता वे किस प्रकार कर सकते हैं ? आपस. ने उत्तर दिया - उसके हाथ को अत्याचार से रोक कर। क्योंकि उसका अत्याचार में बढ़ जाना उसे परमेश्वर के अज़ाब का पात्र बनाएगा। (सही बुख़ारी, हदीस संख्या - 6952)

अत: उस पर दया करते हुए उसे बचाने का प्रयत्न करना है। यह सिद्धान्त समाज के सब से छोटे स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्याप्त है। इस सन्दर्भ में पवित्र क़ुरआन की आयत है -

"यदि मोमिनों के दो गिरोह आपस में झगड़ पड़ें तो उन दोनों में संधि करा दो फिर यदि संधि हो जाने के पश्चात उन दोनों में से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिल कर उस पर चढ़ाई करने वाले के विरुद्ध युद्ध करो यहां तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए फिर यदि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए तो न्याय के साथ (उन दोनों लड़ने वालों) में संधि करा दो तथा न्याय को दृष्टिगत रखो। अल्लाह न्याय करने वालों को बहुत पसन्द करता है।" (अलहुजुरात आयत - 10)

आप फ़रमाते हैं- "यद्यपि यह शिक्षा मुसलमानों से संबंधित है परन्तु फिर भी इस सिद्धान्त को अपनाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की नींव रखी जा सकती है। अत: जब दो क़ौमों का मतभेद जंग का रूप धारण कर ले तो दूसरी क़ौमों को चाहिए कि वे उन्हें बातचीत और सयासी सम्पर्कों की तरफ लाने की कोशिश करें ताकि वह बातचीत की बुनियाद पर सुलह कर सकें परन्तु अगर एक पक्ष सुलह की शर्तों को

स्वीकार करने से मना कर दे और जंग की आग भड़काए तो दूसरे देश उस को रोकने के लिए इकट्ठे हो जांए और उस से जंग करें। जब आक्रमण करने वाली क़ौम पराजित हो कर बातचीत करना चाहे तो तब सारे पक्ष एक ऐसे सुलह नामा के लिए कोशिश करें जिस के फल स्वरूप सुलह हो और स्थायी सुलह हो। ऐसी कठोर और अन्याय पूर्ण शर्तें नहीं होनी चाहिए जो किसी क़ौम के हाथ पैर बांध देने जैसी हों क्योंकि इन शर्तों से एक एसी बैचेनी पैदा होगी जो बढ़ती फैलती जाएगी और अन्त में एक और युद्ध की तरफ ले जाएगी। अत: ऐसी अवस्था में जो हुकूमत दोनों पक्षों के मध्य सुलह की कोशिश करे तो उसे पूरी इमानदारी और निष्पक्ष हो कर काम करना चाहिए। अगर कोई पक्ष इस के विरुद्ध बोले तब भी यह निष्पक्षता स्थापित रहनी चाहिए। अत: इस अवस्था में न्याय करने वाले को कभी क्रोध को प्रकट करना या कोई प्रतिशोधात्मक कारवाई नहीं करनी चाहिए और न ही किसी रंग में कार्य करना चाहिए। प्रत्येक पक्ष को इस के जायज़ अधिकार मिलने चाहिए।

कैपिटल हिल वाशिंगटन डी.सी (अमरीका) में भाषण

27 जून 2012 को कैपिटल हिल वाशिंगटन में एक ऐतिहासिक घटना घटित हुई कि जमाअत अहमदिया के वर्तमान और पंचम ख़लीफ़ा ने अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों में सेनेटर्स, राजदूतों, व्हाइट हाउस और स्टेट डिपार्टमेन्ट स्टाफ़, एन.जी.ओज़ के अधिकारियों, धार्मिक नेताओं, प्रोफेसरों, नीति सलाहकारों, सरकारी अधिकारियों, डिप्लोमेटिक कोर्पस (Corps) के सदस्यों, विचारकों, पेन्टागन के प्रतिनिधियों एवं मीडिया के संपादकों को शान्ति-पथ राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंध विषय पर सम्बोधित किया।

आप फ़रमाते हैं "वास्तविकता यह है कि शान्ति और न्याय परस्पर अनिवार्य हैं। आप इन में से एक के अभाव में दूसरे को नहीं देख सकते। निश्चित रूप से यह ऐसा सिद्धान्त है जिसे समस्त बुद्धिमान लोग समझते हैं। जो लोग विश्व में अशान्ति फैलाने पर कटिबद्ध हैं उन्हें एक ओर रखते हुए कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि किसी समाज और देश यहां तक कि सम्पूर्ण विश्व में जहां न्याय होता हो वहां अव्यवस्था एवं शान्ति का अभाव हो सकता है तथापि हम देखते हैं कि विश्व के कई देशों में अशान्ति फैली हुई है। यह अशान्ति दोनों प्रकार से अर्थात देशों के आन्तरिक और बाह्य तौर पर भी विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संबंधों की दृष्टि से दिखाई देती है।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् कुछ राष्ट्रों के शासकों ने भविष्य में समस्त देशों के मध्य अच्छे और शान्तिपूर्ण संबंधों की इच्छा की तो विश्व-शान्ति की प्राप्ति के लिए लीग ऑफ़ नेशन्स (Leage of Nations) बनाई गई। उसका मुख्य उद्देश्य विश्व-शान्ति को यथावत् रखना था तथा भविष्य में युद्धों को रोकना था। दुर्भाग्यवश इस लीग के सिद्धान्त और जो प्रस्ताव पारित किए गए उनमें कुछ कमियां और दोष थे। इसलिए उन्होंने समस्त लोगों और समस्त देशों के अधिकारों की यथोचित रक्षा न की। परिणामस्वरूप जो असमानता पैदा हुई तो स्थायी शान्ति जारी न रह सकी। लीग के प्रयास विफल हो गए यह बात सीधे तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनी।

इस युद्ध में जो भयंकर विनाश और बरबादी हुई उससे हम सब परिचित हैं जिसमें सम्पूर्ण विश्व के

लगभग पचहत्तर मिलियन लोगों के प्राण नष्ट हुए जिनमें अधिकांश निर्दोष जनता थी। यह युद्ध विश्व की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त होना चाहिए था। यह उन बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों को उन्नति देने का माध्यम होना चाहिए था जो कि समस्त दलों को न्याय पर आधारित उनके अनिवार्य अधिकार प्रदान करता। इस प्रकार विश्व में शान्ति स्थापित करने का माध्यम सिद्ध होता। उस समय विश्व की सरकारों ने किसी सीमा तक शान्ति क़ायम करने का प्रयत्न किया और संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की स्थापना की गई परन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महान और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पूरे नहीं किए जा सके और आज कुछ विशेष सरकारें स्पष्ट तौर पर ऐसे बयान देती हैं जिन से उनकी असफलता सिद्ध होती है।

न्याय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संबंध जो शान्ति स्थापित करने का एक माध्यम हों उनके संबंध में इस्लाम क्या कहता है ? पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया है कि यद्यपि हमारी जातियां और जातीय परिदृश्य हमारी पहचान का एक माध्यम हैं परन्तु वह किसी प्रकार की श्रेष्ठता के औचित्य का माध्यम नहीं हैं।

अत: पवित्र क़ुर्आन यह स्पष्ट करता है कि समस्त लोग समान हैं। इसके अतिरिक्त वह अन्तिम ख़ुत्बा (भाषण) जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया, उसमें आप स. ने समस्त मुसलमानों को नसीहत की कि सदैव स्मरण रखो कि किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर और न ही किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर कोई श्रेष्ठता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी कि एक गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर श्रेष्ठता है। अत: इस्लाम की यह एक स्पष्ट शिक्षा है कि समस्त जातियों और नस्लों के लोग बराबर हैं। यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि समस्त लोगों को बिना किसी भेदभाव अथवा द्वेष के समान अधिकार दिए जाने चाहिएं। यह एक बुनियादी और सुनहरा सिद्धान्त है जो विभिन्न गिरोहों और देशों के मध्य एकता और शान्ति की नींव डालता है।

बहरहाल आज हम देखते हें कि शक्तिशाली और निर्बल देशों के मध्य एक फूट और खाई है। उदाहरणतया संयुक्त राष्ट्र संघ में हम देखते हैं कि विभिन्न देशों के मध्य अन्तर किया जाता है और इसी प्रकार विश्व सुरक्षा परिषद में कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी सदस्य हैं। यह विभाजन फूट और अशान्ति का एक आन्तरिक माध्यम सिद्ध हुआ है। अत: हम निरन्तर इस असमानता के विरुद्ध प्रदर्शनों पर आधारित विभिन्न देशों की रिपोर्ट सुनते रहते हैं। इस्लाम समस्त मामलों में पूर्ण न्याय और समानता का पाठ पढ़ाता है और इस प्रकार हम पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह आयत - 3 में एक और निर्देश पाते हैं। इस आयत में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि न्याय की मांगों को पूर्णतया पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि उन लोगों से भी जिन्होंने घृणा और शत्रुता की समस्त सीमाओं को पार कर लिया हो

एक प्रश्न जो स्वाभाविक तौर पर पैदा होता है वह यह है कि इस्लाम किस प्रकार के न्याय की मांग करता है। सूरह अन्निसा आयत -126 में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि यदि तुम्हें अपने स्वयं के विरुद्ध या अपने माता-पिता या अपने प्रियजनों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो न्याय और सच्चाई को क़ायम रखने के लिए तुम्हें अवश्य ऐसा करना चाहिए।" (भाषण हुज़ूर अनवर वैश्विक संकट और शांति पथ)

हालेंड पार्लियामेंट में भाषण

हुज़ूर अनवर फरमाते हैं: - "पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्नहल की आयत 127 में इस्लामी सरकारों को आदेश दिया गया है कि यदि उन पर कभी आक्रमण हो जाए तो वह केवल अपनी प्रतिरक्षा के तौर पर यथानुकूल उत्तर दें। अत: पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा बहुत स्पष्ट है कि दण्ड मूल अपराध के अनुसार हो न कि उस से अधिक।

सूरह अन्फ़ाल की आयत 62 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- यदि तुम्हारा शत्रु बुरी नीयत से तुम पर आक्रमण करने का इरादा रखता है परन्तु बाद में फिर उपेक्षा करते हुए सुलह का हाथ बढ़ाता है तो उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार करते हुए परस्पर शान्तिपूर्ण मैत्री की ओर बढ़ो इस बात को न देखो कि उनकी नीयत कैसी है।

पवित्र क़ुर्आन की यह शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय अमन और सुरक्षा की स्थापना के लिए सुनहरी सिद्धान्त है। आज के विश्व में बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जहां कुछ देशों ने केवल कल्पना पर आधारित किसी देश के काल्पनिक अत्याचारों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य-प्रणाली ग्रहण कर ली। मालूम होता है कि मानो वे इस सिद्धान्त का पालन कर रहे हों कि It is better to destroy them, before they destroy us "शत्रु पर आक्रमण कर दो ऐसा न हो कि वह पहल कर दे।" इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि शान्ति की स्थापना के किसी भी अवसर को नष्ट न किया जाए चाहे उसकी आशा बहुत ही काल्पनिक क्यों न हो। पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह की आयत-9 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम उस से न्याय न करो। इस्लाम सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कैसी ही प्रतिकूल हों न्याय और इन्साफ का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। युद्ध की स्थिति में भी न्याय और इन्साफ की स्थापना बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा युद्ध के पश्चात् विजेता के लिए आवश्यक है कि वह न्याय से काम ले। और कभी भी अनुचित अत्याचार करने वाला न हो।

परन्तु आज हमें विश्व में सहनशीलता के ऐसे उच्च नैतिक मापदण्ड दिखाई नहीं देते, अपितु युद्ध की समाप्ति पर विजेता देश ऐसी पाबंदियां और प्रतिबंध देते हैं जो पराजित देश की उन्नति की संभावनाओं को सीमित करके उन क़ौमों की स्वतंत्रता और संप्रभुता को अवरुद्ध कर देते हैं। ऐसी कार्य-पद्धति अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में बिगाड़ का कारण है और उनका परिणाम असंतोष और नकारात्मक प्रभावों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वास्तविकता यह है कि स्थायी अमन तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक समाज के प्रत्येक स्तर पर न्याय की स्थापना न हो जाए।

Peace Symposiums का आयोजन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की शांति के प्रयासों में एक peace symposium का आयोजन है जिस का आरम्भ आप ने साल 2004 ई० में किया। ऐसे Symposiums न केवल ब्रिटेन, भारत बल्कि दुनिया के हर हिस्से में आयोजित किए जाते हैं, जहां जमाअत अहमदिया की स्थापना हो चुकी है। इन कांफ्रेंसों में शांति और सद्भाव के विचार को बढ़ाने के लिए सभी वर्ग के लोग

शामिल होते हैं। इन में से कुछ उदाहरण आपके सामने पेश हैं। (1) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 24 मार्च 2012 को नौंवे वार्षिक शांति सम्मेलन आयोजित बैयतुल फुतूह मोर्डन में "परमाणु युद्ध के विनाशकारी परिणाम और सही न्याय की आवश्यकता पर" बोलते हुए फरमाते हैं:

"मुझे याद है कि कुछ साल पहले इसी हॉल में शांति सम्मेलन के दौरान मैंने एक भाषण में दुनिया में शांति के तरीके और साधन पर विस्तार से प्रकाश डाला था और मैंने यह भी उल्लेख किया था कि संयुक्त राष्ट्र को कैसे काम करना चाहिए। बाद में हमारे बहुत प्रिय दोस्त लार्ड ईरक एयूबरी ने कहा कि यह भाषण तो संयुक्त राष्ट्र में सुनाया जाना चाहिए था। यह उनका उच्च हौसला था कि उन्होंने उच्च हौंसले और प्यार से इस बात का इज़हार किया। बहरहाल यह कहना चाहता हूँ कि केवल तकरीरें और भाषणों का कर लेना पर्याप्त नहीं और केवल इस बात से शांति नहीं हो सकता। दरअसल इस महत्त्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने की बुनियादी शर्त सभी मामलों में पूर्ण इंसाफ और न्याय है। कुरआन की सूर: नंबर 4 और आयत 136 हमें इस बारे में एक सुनहरा नियम और सबक बताती है।

इसमें बताया गया है कि न्याय की आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिएं चाहे आपको अपने ख़िलाफ, अपने माता-पिता के ख़िलाफ, अपने मित्रों और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही क्यों न देनी पड़े। यह वास्तविक न्याय है जिस में सामूहिक हितों के लिए निजी हितों का बलिदान कर दिया जाता।"

अगर हम इस सिद्धांत की समग्र समीक्षा करें तो हमें एहसास होगा कि अन्याय पूर्ण सुझाव मनवाने के तरीके जो धन और बलबूते के प्रभाव पर धारण किए जाते हैं छोड़ दिए जाने चाहिए। इसके बजाय प्रत्येक देश के प्रतिनिधि और राजदूतों को ईमानदारी के साथ और न्याय और समानता के सिद्धांतों का समर्थन की इच्छा के साथ आगे आना चाहिए। हमें हर प्रकार के पूर्वाग्रहों और भेदभाव को पूर्णता मिटाना होगा क्योंकि शांति का यही एकमात्र रास्ता है। अगर हम संयुक्त राष्ट्र महासभा या सुरक्षा परिषद की समीक्षा करें तो अक्सर हम देखते हैं कि वहाँ किए गए भाषणों और जारी किए जाने वाले बयानों की तो बहुत प्रशंसा की जाती हैं और सराहना की जाती है लेकिन यह सराहना व्यर्थ है क्योंकि मूल निर्णय तो पहले से ही हो चुके होते हैं। अत: जहां निर्णय बड़ी शक्तियों के दबाओ और प्रभाव के अधीन और न्याय और वास्तविक हक सच्चे निर्णयों के ख़िलाफ किए जांए तो एसी तकरीरें खोखली और अर्थहीन हैं और केवल दुनिया को धोखा देने के काम आती हैं।

तो अगर बड़ी शक्तियों ने न्याय से काम न लिया और छोटे देशों की वंचित होने की भावना को समाप्त नहीं किया और उत्कृष्ट रणनीति न अपनाई तो स्थिति अंतत: हाथ से निकल जाएगी और फिर जो तबाही और बर्बादी होगी वह हमारी सोच और कल्पना से बढ़कर होगी बल्कि दुनिया के अधिकतर जो शांति के इच्छुक हैं वे भी इस तबाही की लपेट में आ जाएंगे। अत: मेरी हार्दिक इच्छा और आकांक्षा है कि बड़ी शक्तियों के नेता इस भयानक तथ्य को समझ जाएं और जो आक्रामक रणनीति अपनाने और अपनी महत्वाकांक्षाओं और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ताकत के प्रयोग के स्थान पर ऐसी रणनीति अपनाने की कोशिश करें जिनसे न्याय को बढ़ावा दिया जाए और इसे सुनिश्चित करें।

(2) इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बारहवें शांति सम्मेलन

आयोजित दिनांक 14 मार्च 2015 ई० स्थान बैयतुल फ़ुतूह मार्डन में "विश्व शांति के लिए सुनहरा नियम" विषय पर ख़िताब करते हुए फरमाते हैं-

"यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जब कभी और जहाँ भी कोई अपने घृणित अत्याचार और अन्याय की पुष्टि इस्लाम के नाम से करने की कोशिश करता है तो उसकी ज़रूर निंदा की जानी चाहिए और यह बात भी ठीक है कि ऐसे अत्याचार और अन्याय का इस्लाम की सच्ची और शांति वाली शिक्षा से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। हुज़ूर कहते हैं कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कि मैं यह नहीं मानता कि मौजूदा परिस्थितियों में Policy makers और सरकारों द्वारा आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आवश्यक और प्रभावी कदम उठाए गए हैं।

"मेरे विचार में यह कहीं अधिक उपयोगी और प्रभावी होगा कि बड़ी शक्तियां स्थानीय सरकारों की मदद करें और उन्हें अपने भरोसे में लेते हुए तथा एक दूसरे पर भरोसा करने के विश्वास को मज़बूत करें और आपस के सहयोग के साथ एक व्यावहारिक रणनीति को बनाते हुए चरमपंथ और नफरत भरे विचारों को फैलने से रोकने की कोशिश की जानी चाहिए। और यह काम कहीं अधिक प्रभावी साबित होगा इस के स्थान पर यह बात कि सरकार स्थानीय विद्रोहियों को सैन्य प्रशिक्षण और हथियार प्रदान किए जांए। इस प्रकार की नीति केवल उन देशों में और अधिक शरारत और बुराई फैलाने का कारण हो सकती है, हालांकि हम ऐसे नकारात्मक उपायों के ख़तरनाक परिणाम अपनी आँखों के साथ देख चुके हैं।

कुछ समय पहले कुछ बड़ी शक्तियों ने सीरिया सरकार के विद्रोहियों को Military Training दी थी जिनके बारे में फिर यह खबरें आईं कि विद्रोहियों ने सैन्य प्रशिक्षण और आधुनिक हथियार प्राप्त करने के बाद आतंकवादी संगठनों में शामिल हो गए इसके बावजूद आज भी हज़ारों सीरियाई विद्रोहियों को तुर्की, कतर और सऊदी अरब में सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

मैं विश्वास रखता हूँ कि यह कहीं अधिक विस्तार योग्य होगा कि बड़ी ताकतें आपसी विश्वास पैदा करके आतंकवाद को समाप्त करने के लिए स्थानीय सरकारों को सहायता प्रदान करवाएं और यह मदद इस शर्त पर दी जानी चाहिए कि वे अपने देश की जनता के साथ न्याय की आवश्यकताओं को पूरा करेंगे और किसी भी तरह से उनके अधिकारों को नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा।

सारांश यह है कि उग्रवाद को समाप्त करने के लिए जो कदम अभी तक उठाए गए हैं वे प्रभावी साबित नहीं हुए अगर हम लीबिया के मामले पर नज़र डालें तो पाते हैं कि अब कुछ साल पहले ही कुछ शक्तियों ने जनरल गद्दाफी की सरकार को समाप्त करने के लिए स्थानीय विद्रोहियों की मदद की थी, लेकिन प्राप्त क्या हुआ? क्या उससे कुछ लाभ हुआ लीबिया की जनता के जीवन में कोई सुधार पैदा हुआ? बेशक नहीं, लेकिन इसके बजाय पूरा देश तबाह हो गया और दहशत गर्द लोगों के लिए breedin ground बन गया।

अहमदिया मुस्लिम पीस प्राइज़

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शांति की कोशिशों को और अधिक बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2009 ई० से Peace Symposium ब्रिटेन अवसर पर ऐसे संगठनों

या लोगों को जो दुनिया में शांति के प्रयास करते हैं चुन कर Ahmadiyya Muslim Peace Prize देना आरम्भ किया जिस में सम्मानित पुरस्कार के साथ, 10,000 पाउंड का नकद पुरस्कार है।

इस सिलसिले में सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ द्वारा सबसे पहला Ahmadiyya Muslim Peace Prize आदरणीय लार्ड एरिक एयूब्यूरे (Lord Eric Avebury) को उनकी ओर से मानवाधिकार की स्थापना के लिए लगातार किए गए प्रयासों को स्वीकार करते हुए वर्ष 2009 ई० में दिया गया। जबकि सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने भारत के प्रांत महाराष्ट्र की आदरणीया सिंधू ताई सपकाल साहिबा Mother of Orphans को यह सम्मान पीस संगोष्ठी ब्रिटेन 2015 ई० के अवसर पर आपके द्वारा अनाथों और बेसहारा बच्चों के विकास तथा उन्नति के लिए किए जाने वाली सेवाओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हुए अपने मुबारक हाथों से दिया।

दुनिया के प्रमुखों के नाम पत्र

इसी तरह सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुनिया में शांति की स्थापना के लिए एक ओर प्रशंसनीय और प्रभावी प्रयास के अधीन दुनिया के धार्मिक और राजनीतिक शासकों को पत्र लिखे, जिस में आप ने उन सभी को यह समझाने की कोशिश की कि आज दुनिया विशेषकर मानवता को किस प्रकार घातक खतरों का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही आप ने इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में यह भी बताया कि मानवता और दुनिया को बचाने के लिए हम सब पर क्या ज़िम्मेदारियां निहित हैं और ज़िम्मेदारियों को हमें किस तरीके से अदा करना चाहिए? इन में से कुछ पत्र संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

(1) इस्त्राईल के प्रधानमंत्री को पत्र में आपने लिखा है:

मेरा आप से यह निवेदन है कि विश्व को एक विश्व युद्ध में झोंकने की बजाए विश्व को यथासंभव विनाश से बचाने का प्रयत्न करें। शक्ति द्वारा विवादों का समाधान करने के स्थान पर वार्तालाप के द्वारा उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को बतौर उपहार एक उज्ज्वल भविष्य दें, न कि हम उन्हें विकलांगताओं जैसे दोषों का उपहार दें।

(2) ईरान के इस्लामी गणराज्य के राष्ट्रपति को ध्यान:

आजकल विश्व में बहुत अशान्ति और बेचैनी है। बहुत से देशों में छोटे स्तर के युद्ध आरंभ हो चुके हैं जबकि अन्य स्थानों में महा-शक्तियां शान्ति स्थापित करने के बहाने हस्तक्षेप कर रही हैं। प्रत्येक देश किसी अन्य देश की सहायता या विरोध में प्रयासरत है परन्तु न्याय की मांगे पूर्ण नहीं की जा रहीं। मैं खेद के साथ कहता हूं कि यदि अब हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। बहुत से छोटे और बड़े देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद होने के कारण परस्पर द्वेष और शत्रुता में वृद्धि हो रही है। ऐसी कठिन परिस्थिति में तृतीय विश्व-युद्ध भयानक रूप में निश्चय ही हमारे निकट है। जिस प्रकार कि आप जानते हैं कि परमाणु हथियारों के उपलब्ध होने का तात्पर्य यह है कि तृतीय विश्व-युद्ध एटमी युद्ध होगा। उसका अन्तिम परिणाम बहुत विनाशकारी होगा तथा ऐसे

युद्ध के दूरगामी प्रभाव भावी पीढ़ियों के विकलांग एवं कुरूप पैदा होने का कारण होंगे।

(3) पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को लिखा:

हम सभी परिचित हैं राष्ट्र संघ की विफलता और 1932 ई० के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुन: युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्तत: कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अत: मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाए यह अति आवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाती परमात्मा जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है को पहचाने, क्योंकि संकट और विपदाओं में मानवता के जीवित बचने को केवल यही सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।

(4) ब्रिटेन के प्रधान मंत्री को लिखा:

मेरा यह निवेदन है कि प्रत्येक स्तर पर और दृष्टिकोण से हमें अनिवार्य रूप से प्रयास करना होगा ताकि नफ़रत की ज्वाला को शान्त किया जा सके। इस प्रयास की सफलता के पश्चात् ही हम भावी पीढ़ियों को उज्जवल भविष्य का आश्वासन दे सकते हैं परन्तु यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो हमारे मन में इस संबंध में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमाणु युद्ध के फलस्वरूप भावी पीढ़ियों को हर जगह हमारे कर्मों के भयानक परिणाम को भुगतना पड़ेगा और वे अपने पूर्वजों को पूरे विश्व को विनाश की ज्वाला में झोंकने के कारण कभी क्षमा नहीं करेंगी। मैं आपको पुन: स्मरण कराता हूं कि ब्रिटेन भी उन देशों में से है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं और डालते हैं। यदि आप चाहें तो आप न्याय और इन्साफ़ की मांगों को पूरा करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। अत: ब्रिटेन तथा अन्य शक्तिशाली देशों को विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। अल्लाह तआला आपको और विश्व के अन्य नेताओं को यह सन्देश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

लीफ लेट्स का वितरण :

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपनी विश्व शान्ति की कोशिशों में दुनिया के प्रत्येक वर्ग को टारगेट करके लीफ लेटस का वितरण किया। और इस शांति मिशन के साथ प्रत्येक विशेष और साधारण व्यक्ति को जोड़ने की कोशिश की। आप ने किसी भी देश के साधारण वर्ग को

इस्लाम की धार्मिक शिक्षाओं के प्रकाश में शांति के विषय पर आधारित विभिन्न लीफ लेटस वितरण करने की जमाअत अहमदिया को हिदायत फरमाई। आप की इस हिदायत की रोशनी में जमाअत अहमदिया के लाखों परवाने दुनिया के सारे क्षेत्रों में करोड़ों लीफ लेटस छपा कर बांट रहे हैं। और शांति के इस मिशन के साथ लोगों को जोड़ रहे हैं।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 23 नवंबर, 2015 ई० को हिल्टन होटल, ओडोबो टोकियों में सम्माननीय मेहमानों को संबोधित करते हुए फरमाया-

"मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी पैठ और पहुंच को प्रयोग में लाते हुए विश्व में अमन और परस्पर एकता के लिए प्रयास करें। हमारा सामूहिक दायित्व है कि विश्व में जहां कहीं भी अशान्ति और तनाव है हम न्याय के लिए आवाज़ उठाएं और शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयास करें ताकि हम वैसे भयंकर युद्ध से सुरक्षित रह सकें जो आज से सत्तर वर्ष पूर्व लड़ा गया था, जिसके विनाशकारी प्रभाव कई दशकों पर छाए हुए थे अपितु आज तक महसूस किए जाते हैं। यद्यपि सीमित स्तर पर एक विश्वयुद्ध का प्रारंभ हो चुका है। परन्तु हमें चाहिए कि हम अपने दायित्वों को यथा समय निभाएं ऐसा न हो कि कहीं उसके प्रभाव फैलकर विश्व को अपनी लपेट में ले लें और वे रक्त बहाने वाले और घातक हथियार दोबारा प्रयोग हों जो हमारी भावी नस्लों को तबाह कर दें।

अत: आइए, सब मिलकर अपने दायित्वों को निभाएं। विरोधी संगठन बनाने की बजाए हम सब को एकमत होकर परस्पर सहयोग करना चाहिए। हमारे पास अब कोई और चारा नहीं। क्योंकि यदि तृतीय महायुद्ध नियमित रूप से आरंभ हो गया तो उसके परिणामस्वरूप आने वाला विनाश और बरबादी के सिलसिलों की कल्पना भी असंभव है। निस्सन्देह ऐसी स्थिति में अतीत के युद्ध इस की तुलना में बहुत साधारण महसूस होंगे।

मेरी दुआ है कि विश्व इस स्थिति की कठोरता को समझे। इससे पूर्व कि विलम्ब हो जाए, मानवजाति ख़ुदा तआला के सामने झुकते हुए उसके अधिकारों तथा आपसी अधिकारों को अदा करने लगे।

अल्लाह तआला उन्हें समझ और विवेक प्रदान करे जो धर्म के नाम पर अशान्ति का वातावरण पैदा कर रहे हैं तथा उन्हें भी जो अपने आर्थिक हितों के उद्देश्य से भौगोलिक एंव राजनीतिक युद्ध कर रहे हैं। काश उन्हें ज्ञात हो जाए कि उनके उद्देश्य कितने अनुचित और विनाशकारी हैं। ख़ुदा करे कि विश्व के हर क्षेत्र में चिरस्थायी शान्ति स्थापित हो। आमीन

☆ ☆ ☆

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

☆स्वस्थ मनुष्य के शरीर में रक्त का औसत 5 – 6 लीटर होता है।

☆मनुष्य के रक्त का शुद्धिकरण किडनी में होता है।

☆मानव शरीर की सबसे छोटी ग्रंथि पिट्यूटरी मस्तिष्क में होती है।

☆मानव शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत होती है।

☆इन्सुलिन की खोज बैटिंग एवं वेस्ट ने की थी।

☆वस्तु का प्रतिबिंब आँखों के रेटिना में बनता है।

☆नेत्रदान में आँख के कार्निया को दान किया जाता है।

☆सोयाबीन में सर्वाधिक प्रोटीन (42%) पाया जाता है।

☆जल में घुलनशील विटामिन B एवं C है। ☆विटामिन सी C खट्टे फलों में पाया जाता है।

☆विटामिन सी की रासायनिक नाम 'स्कर्वीक एसिड' है। ☆जीव विज्ञान के जनक अरस्तू को कहा जाता है।

☆वनस्पति विज्ञान के जनक थियोफ्रस्ट्स को कहा जाता है।

☆आधुनिक वर्गीकी (Modern taxonomy) के पिता लीनियस को कहा जाता है।

☆एडवर्ड जेनर ने चेचक के टीका की खोज की थी।

☆आम का वनस्पतिक नाम मेनजीफेरा इंडिका है।

☆कार्बन डाई आक्साइड गैस ग्रीन हाउस प्रभाव में सबसे ज्यादा योगदान करती है।

☆त्वचा का कैंसर सूर्य की पराबैंगनी किरणों से होता है।.

☆विद्युत बल्ब के अंदर आर्गन गैस भरी होती है।

☆नाइट्रस आक्साइड को हंसाने वालीगैस कहा जाता है। इसकी खोज प्रीस्टले ने की थी।

☆सर्वप्रथम 'आर्वत सारणी ' का निर्माण रशियन वैज्ञानिक मेंडलीफ ने किया था।

☆आधुनिक आर्वत सारणी के नियम मोसले द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

☆विद्युत धारा को ऐम्पियर में मापा जाता है।

☆डायनेमो उपकरण द्वारा यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपांतरित किया जाता है।

☆मोमबत्ती रासायनिक ऊर्जा को प्रकाश एवं ऊष्मा ऊर्जा में रूपांतरित करती है।

☆प्रकाश वर्ष दूरी मापने की इकाई है। दूरी मापने की सबसे बड़ी इकाई पारसेक है।

☆साधारण नमक (सोडियम क्लोराइड NaCl) खाने एवं अचार के परिरक्षण में उपयोग होता है।

☆हीरा एवं ग्रेफाइट कार्बन के अपरूप है।

☆हीरा विद्युत का कुचालक होता है तथा ग्रेफाइट विद्युत का सुचालक होता है।

☆एल. पी. जी. में ब्यूटेन एवं प्रोपेन का मिश्रण होता है।

☆एल. पी. जी. की तेज गंध उसमें मिले सल्फर के यौगिक (मिथाइल मरकॉप्टेन) से होती है।

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝
(النحل 11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM

Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu
Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

**Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221**

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

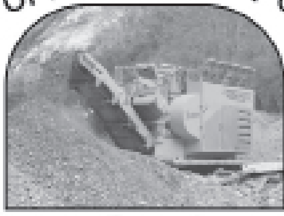

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt,
Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in
Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

127 वां जलसा सालाना क़ादियान (भारत)

दिनांक 23, 24, 25 दिसंबर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक **23, 24, 25 दिसंबर 2022** ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की स्वीकृति प्रदान की है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके, दुआओं के साथ तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस जलसे की कामयाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार सईद रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆